महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सीखने की शैली और तनाव समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध का तुलनात्मक अध्ययन

एजुकेशन विभाग

में पी- एच- डी

उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध - सारांश

प्रारूप

वाई बी एन यूनिवर्सिटी

राजाउलातु, नामकुम, रांची

झारखंड 834010 (भारत)

जनवरी, ईयर 2020

शोध पर्यवेक्षक

डॉ अवधेश कुमार यादव

एसोसिएट प्रोफेसर

स्कूल ऑफ एजुकेशन

शोध प्रज्ञ

संदीप आनंद

नामांकन संख्या 1907010329

डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन

विषय सूची

1. प्रस्तावना 03

2. साहित्य की समीक्षा 05

3. उद्देश्य / अध्ययन की आवश्यकता 08

4. अनुसंधान पद्धति/अनुसंधान कार्य की आवश्यकताएं 11

5. शोधकार्य के अध्ययन 14

6. संदर्भ ग्रन्थ सूची 15

1. प्रस्तावना

सीखना समाजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से बरी किए गए व्यक्ति के जीवन के अनुभव का कुल योग है। यह केवल तथ्यात्मक जानकारी के अधिग्रहण या कौशल में महारत हासिल करने से अधिक है, क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति के जीवन के अनुभव का कुल योग भी शामिल है जो प्रकृति में अपेक्षाकृत स्थायी है और उसके लिए जीवित मूल्य हैं।

सोच व्यवहार का एक पैटर्न है जिसमें हम समस्या के आंतरिक प्रतिनिधित्व का उपयोग करते हैं। सोच समस्या समाधान प्रक्रिया है जिसमें हम प्रत्यक्ष गतिविधियों के स्थान पर विचारों या प्रतीकों का उपयोग करते हैं। सोचना अनिवार्य रूप से एक संज्ञानात्मक क्षमता है।

अधिकांश लोग शैलियों के उपयोग में कुछ हद तक लचीले होते हैं, और परिस्थितियों के अनुसार शैलीगत मांगों के लिए खुद को अपनाने के लिए। माता-पिता और शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे छात्र के मन की प्रकृति और उसके कार्य और सीखने और सोचने की उनकी विभिन्न शैलियों को समझें।

शैलियाँ मस्तिष्क के गोलार्द्ध कार्यों को इंगित करती हैं और छात्र सीखने की रणनीति और सूचना प्रसंस्करण, मस्तिष्क क्षेत्र की प्राथमिकताओं पर आधारित होते हैं। शैलियाँ क्षमताओं के बजाय प्रवृत्तियाँ हैं। वे बुद्धि को निर्देशित करने के तरीके हैं जिसमें एक व्यक्ति सहज महसूस करता है। शिक्षकों के लिए छात्रों की पसंदीदा शैलियों के बारे में जानना महत्वपूर्ण है ताकि शिक्षक छात्रों के सीखने के अवसरों का लाभ उठा सकें।

शिक्षकों द्वारा अपनाई गई शिक्षण पद्धति अक्सर उनकी व्यक्तिगत सोच शैली को दर्शाती है, शिक्षकों की समान सोच शैली वाले छात्रों को केवल लाभान्वित और पुरस्कृत किया जाता है। क्षमताएं जैसी शैलियाँ

काफी हद तक पर्यावरण की स्थिति और बच्चों को उनके माता-पिता और शिक्षकों द्वारा पोषित करने के कारण विकसित होती हैं।

शैलियाँ किसी व्यक्ति के सीखने और सोचने की अपनी शैली में सूचना के विभिन्न तरीकों को बनाए रखने और संसाधित करने में मस्तिष्क के प्रभुत्व पर निर्भर करती हैं। सूचना प्रसंस्करण के लिए दो गोलार्द्धों की वरीयता में अंतर को सीखने और सोचने की शैली *(SOLAT)* के रूप में संदर्भित किया गया है। यह समस्या समाधान में एक छात्र की सीखने की रणनीति और मस्तिष्क गोलार्द्ध वरीयता को इंगित करता है। संज्ञानात्मक कार्यों की उनकी मांगों को सर्वोत्तम रूप से फिट करने के लिए व्यक्तियों को उनकी सूचना प्रसंस्करण प्रक्रियाओं को संशोधित करने के लिए प्रशिक्षित करना संभव हो सकता है।

अच्छा पारिवारिक वातावरण छात्रों को सीखने और सोचने की विभिन्न शैलियों की ओर ले जाता है। मान्यता, प्रशंसा और पर्याप्त स्वतंत्रता के साथ घरेलू वातावरण में महत्व आत्म-अवधारणा के विकास की ओर ले जाता है। कॉलेज और पारिवारिक वातावरण में तनाव जीवन में शारीरिक विकास, मानसिक बीमारी, सामाजिक, भावनात्मक और सौंदर्य असंतुलन को प्रभावित करता है। समायोजन हमारे जीवन में सोच का प्रबंधन है। यह क्रिया में मानसिक स्वास्थ्य है। समायोजन में संकट जैसे निराशा, जटिलता, संघर्ष, रक्षा तंत्र, अस्वीकृति हमारे छात्रों को उनकी पढ़ाई और पारिवारिक जीवन से अलग कर देती है। अकादमिक उपलब्धि ज्ञान के शरीर के दिए गए कौशल में किसी व्यक्ति के प्रदर्शन में अर्जित दक्षता की उपलब्धि है। प्रत्येक माता-पिता और कॉलेज उम्मीद करते हैं कि उनके छात्रों को विभिन्न गतिविधियों के बदले में हासिल करना चाहिए जो उनके कॉलेजों में सामान्य से उच्च स्तर की अपेक्षा के साथ प्रदान की जाती हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

देसीरी बोलियन किन; निओब वे; प्रीतिका मुखर्जी (2018) ने किए गए दो अध्ययनों और उनके विश्लेषणों से एकत्र किए गए अनुदैर्ध्य डेटा पर चित्रण करते हुए सुझाव दिया कि कई चीनी अमेरिकी किशोर अपने माता-पिता और साथियों से अलग-थलग महसूस करते हैं। माता-पिता से अलगाव भाषा की बाधाओं, माता-पिता के काम के कार्यक्रम और उच्च माता-पिता की शैक्षिक अपेक्षाओं जैसे कारकों के कारण था। साथियों से अलगाव चीनी और गैर-चीनी दोनों साथियों से चल रहे सहकर्मी भेदभाव के कारण था।

संध्या मिश्रा और डॉ. वीना बंबा (2018) ने स्कूल के छात्रों के उनके परिवारों के संबंध में एक अध्ययन किया। यह सर्वविदित तथ्य है कि स्कूल का प्रदर्शन एक स्वतंत्र घटना नहीं है, बल्कि यह कई कारकों से सीधे प्रभावित होता है, जिनमें से कुछ व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत होते हैं जबकि कई अन्य उस वातावरण में स्थित होते हैं जिसमें सीखने की प्रक्रिया होती है यानी स्कूल और परिवार। ज्ञान की प्रारंभिक शुरुआत परिवार के भीतर होती है, प्रारंभिक वर्षों में एक साधारण स्तर पर, और फिर आगे स्कूल में निर्मित होती है। परिवार बाद में स्कूल में बातचीत और सीखने के लिए मंच तैयार करता है। परिवार संरचना और कार्यप्रणाली में बहुत भिन्न होते हैं। स्कूल और बच्चों में भी भिन्नताएं बाहर निकलती हैं, यह समझती हैं कि परिवार के भीतर बच्चों के अनुभव उनके शैक्षिक परिणामों में कैसे योगदान करते हैं।

डॉ के सी बरमोला (2018) ने पारिवारिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया। एक अन्य निष्कर्ष में पारिवारिक वातावरण और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य के साथ महत्वपूर्ण संबंध हो सकता है लेकिन शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ नहीं। दूसरी ओर मानसिक स्वास्थ्य और अकादमिक प्रदर्शन दोनों में महत्वपूर्ण संबंध हो सकते हैं।

स्वप्निल महेंद्र कांबले (2019) ने देखा, परिवार समाजीकरण की पहली और प्रमुख एजेंसी होने के नाते बच्चे के विकास पर बहुत प्रभाव और प्रभाव डालता है। विभिन्न अध्ययनों द्वारा यह दिखाया गया है कि अधिकांश बच्चे जो सफल/महान उपलब्धि प्राप्त करते हैं और अच्छी तरह से समायोजित होते हैं, उन परिवारों से आते हैं जहां स्वस्थ संबंध बनाए रखते हैं। शोध अध्ययनों ने साबित किया है कि घर, स्कूल और पड़ोस में एक अच्छा, सहायक वातावरण बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ा सकता है।

एम्बर एल पॉकर्ट; जेरेमी डब्ल्यू पेटिट; मैरिसोल पेरेज़; Rheeda L. Walker (2019) ने पाया कि सांस्कृतिक तनाव नकारात्मक प्रभाव और वैश्विक विशेषताओं के साथ महत्वपूर्ण रूप से जुड़ा हुआ था, यहां तक कि अन्य प्रासंगिक भविष्यवक्ताओं के लिए नियंत्रित करते हुए भी। एट्रिब्यूशनल शैली नकारात्मक प्रभाव और सांस्कृतिक तनाव के बीच संबंध के लिए जिम्मेदार नहीं थी। सकारात्मक प्रभाव और स्थिर और आंतरिक आरोपण शैली सांस्कृतिक तनाव से संबंधित नहीं थे।

डेविड पुटवेन (2017) ने शोध किया कि इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली में सटीकता की कमी है। साहित्य में 'तनाव', 'चिंता' और 'चिंता' शब्दों का परस्पर उपयोग किया जाता है जैसे कि वे एक ही घटना को संदर्भित करते हैं, और 'परीक्षा तनाव' और 'अकादमिक तनाव' के डोमेन स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं हैं। साहित्य में यह हमेशा स्पष्ट नहीं होता है कि 'तनाव' शब्द का क्या अर्थ है। कुछ मामलों में, इसका उपयोग उत्तेजना के गुणों (जैसे एक परीक्षा) और अन्य मामलों में संकट के व्यक्तिपरक अनुभव के संदर्भ में किया जा रहा है। और अंत में, मात्रा का ठहराव और छात्रों में तनाव और चिंता को 'मापने' के तरीकों के प्रति शोध में भारी पूर्वाग्रह है।

एमिली ए। पियर्सल; मैरीबेले सी. कीम, (2017) ने अपने परिणामों में संकेत दिया कि महिला छात्र पुरुषों की तुलना में अधिक तनावग्रस्त थीं; पारंपरिक और गैर-परंपरागत छात्रों के बीच कोई सांख्यिकीय महत्वपूर्ण अंतर नहीं थे। तनाव से निपटने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने

वाली गतिविधियों में परिवार और दोस्तों से बात करना, अवकाश गतिविधियाँ और व्यायाम करना शामिल है। कम वांछनीय मुकाबला करने की रणनीतियाँ शराब पीना, धूम्रपान करना और अवैध दवाओं का उपयोग करना था।

राकेश कुमार अग्रवाल; शैलेंद्र सिंह चाहर (2017) ने अपने निष्कर्षों में खुलासा किया कि छात्र भूमिका अधिभार, भूमिका ठहराव और आत्म-भूमिका दूरी का अनुभव कर रहे हैं। पुरुष छात्रों को महिला छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की भूमिका में ठहराव का अनुभव होता है। हालांकि, प्रथम वर्ष के छात्रों और उनके वरिष्ठों, या प्रबंधन और इंजीनियरिंग छात्रों के बीच किसी भी भूमिका तनाव पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा जा सका। परिणाम देश में प्रचलित सामाजिक और शैक्षिक वातावरण के संकेतक हैं।

डेविड रोबॉथम (2018) ने उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच तनाव का अध्ययन करने के लिए अपने शोध कार्य में, अपने अध्ययन के दौरान परिपक्व होने वाले छात्रों का एक अध्ययन जो वे अनुभव करते हैं और वे उस तनाव से कैसे निपटते हैं, समग्र परिणामों ने सुझाव दिया कि छात्र तनाव ने पूर्ण की पेशकश नहीं की है। छात्रों के तनाव के अनुभवों का लेखा-जोखा और स्पष्टीकरण।

हांगलिन चेन; यू-चेउंग वोंग; माओ-शेंग रान; क्रिस्टी गिलसन (2019) ने अपने अध्ययन में साबित किया कि मनोवैज्ञानिक कल्याण का कॉलेज के तनाव के साथ नकारात्मक संबंध है और सकारात्मक मुकाबला करने की रणनीतियों का मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य समस्याओं पर महत्वपूर्ण बफरिंग प्रभाव पड़ता है। पुरुष छात्रों ने उच्च स्तर के तनाव, बदतर मनोवैज्ञानिक कल्याण और सकारात्मक मुकाबला रणनीतियों का उपयोग करने के प्रति कम झुकाव की सूचना दी। विज्ञान विषयों में पढ़ने वाले छात्रों ने व्यक्तिगत परेशानी में उच्च अंक प्राप्त किए। निजी कॉलेजों के छात्रों ने उच्चतम स्तर की शैक्षणिक परेशानी की सूचना दी, जबकि वर्ष 2 के छात्रों में अन्य वर्षों

में पढ़ने वाले छात्रों की तुलना में तनाव का उच्चतम स्तर और मनोवैज्ञानिक स्तर का निम्नतम स्तर था।

ताजुलरीपिन सुलेमान; अमीनुद्दीन हसन; विजाता एम.सेपियन; सैफुद्दीन कुमार अब्दुल्ला (2019) ने अपने अध्ययन में दिखाया कि किसी भी छात्र ने उच्च तनाव का अनुभव नहीं किया, 29 प्रतिशत छात्रों ने मध्यम तनाव का अनुभव किया और 71 प्रतिशत छात्रों ने कम तनाव का अनुभव किया। अध्ययन के निष्कर्षों ने यह भी संकेत दिया कि ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालयों में लिंग और छात्रों के बीच तनाव के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर हैं। एक सामान्य निष्कर्ष यह है कि ऐसे कई कारक हैं जो छात्रों के तनाव को प्रभावित करते हैं जैसे कि माता-पिता की शैली, माता-पिता की शिक्षा पृष्ठभूमि, छात्रों का वातावरण जो छात्रों के जीवन में प्रभाव डाल सकता है।

3. उद्देश्य / अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. कॉलेज के छात्रों की सीखने की शैली और सोच की पहचान का अध्ययन करना।

2. कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण की पहचान का अध्ययन करना।

3. कॉलेज के छात्रों के तनाव की पहचान का अध्ययन करना।

4. कॉलेज के छात्रों के समायोजन की पहचान का अध्ययन करना।

5. कॉलेज के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की पहचान का अध्ययन करना।

6. कॉलेज के छात्रों की सीखने की शैली और सोच और पारिवारिक वातावरण के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

7. कॉलेज के छात्रों की सीखने की शैली और सोच और तनाव के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

8. कॉलेज के छात्रों की सीखने की शैली और सोच और समायोजन के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

9. कॉलेज के छात्रों की सीखने की शैली और सोच और अकादमिक उपलब्धि के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता:

इस अध्ययन का उद्देश्य यह है कि अधिकांश छात्र शैलियों का उपयोग करते हैं और परिस्थितियों के अनुसार शैलीगत मांगों के लिए खुद को अपनाने के लिए अलग-अलग डिग्री के साथ प्रयास करते हैं। शिक्षकों के लिए अपने छात्रों की पसंदीदा शैली के बारे में जानना महत्वपूर्ण है ताकि वे छात्रों के सीखने और सोचने के अवसरों का लाभ उठा सकें। बचपन में सीखने और सोचने की शैली व्यक्तियों के व्यक्तित्व की आदतों और मूल्यों के बारे में जानने के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करके उनके जीवन में नींव रखती है। घर और कॉलेजों में बाहरी प्रेरणा उन्हें उनकी सीखने और सोचने की शैली में बेहतर अध्ययन वातावरण के लिए प्रेरित करती है। सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ किया गया सीखना अवधारण के लिए सीखा जाता है। जुनून के साथ की गई सीख प्रतिधारण में चली जाती है। अवधारण के लिए, मस्तिष्क और हृदय दोनों का उपयोग करके सीखने की आवश्यकता है। यह विश्लेषण और संश्लेषण की शैली के साथ सीखना चाहिए। सीखने और सोचने की उनकी शैली में व्यक्तिगत अंतर के कारण एक बच्चा व्यवस्थित और व्यवस्थित पैटर्न में कार्य करता है और दूसरा बच्चा एक व्यवस्थित पैटर्न में कार्य कर सकता है। कई शिक्षक अभी भी छात्रों के सीखने और सोचने की प्रक्रिया की शैलियों के बारे में उलझन में हैं, इन शैलियों

का कॉलेजों में बच्चों के प्रदर्शन पर क्या प्रभाव पड़ता है और उनकी क्षमता, गतिविधि और समस्या समाधान व्यवहार के स्तर का आकलन करने के लिए बच्चों के प्रदर्शन पर ध्यान क्यों दिया जाना चाहिए।

वर्तमान अध्ययन कॉलेज के छात्रों के सीखने की दर से संबंधित है क्योंकि यह उनकी सीखने की शैली और सोचने की क्षमता और उपयोग में कौशल की क्षमता के कारण भिन्न है। यह यह पता लगाने में भी मदद करता है कि कैसे अच्छा पारिवारिक वातावरण उनकी सीखने की शैली और सोच के पहलुओं की ओर ले जाता है। घर पर मान्यता, प्रशंसा, जीवन के सही आदर्शों को स्थापित करने की पर्याप्त स्वतंत्रता उन्हें कॉलेज के छात्रों में आत्म अवधारणा विकसित करने के लिए प्रेरित करती है। कॉलेज स्तर पर और पारिवारिक वातावरण में तनाव, थकान का संघर्ष छात्रों को खराब स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। यह उनके शारीरिक विकास और विकास, सामाजिक भावनात्मक चरित्र निर्माण और जीवन में सौंदर्य असंतुलन को भी प्रभावित करता है। अच्छा घर और बेहतर कॉलेज माहौल उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और उचित शैक्षणिक उपलब्धि के लिए कार्य करता है। समायोजन जीवन की चीजों का प्रबंधन है और यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति अपने और अपने पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने के लिए अपने व्यवहार को बदलता है। जीवन कौशल के साथ अच्छा मानसिक स्वास्थ्य छात्रों को नेतृत्व करने और जीवन के कुशल तरीकों के अनुकूल होने देता है। समायोजन में विभिन्न खतरे हैं जैसे हताशा, जटिलता, संघर्ष, रक्षा तंत्र, अस्वीकृति; वापसी उन्हें अपनी पढ़ाई और अपने पारिवारिक जीवन से खुद को अलग करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी सीखने और सोचने की शैली में स्पष्टता उन्हें एक अच्छी सैद्धांतिक जीवन शैली का नेतृत्व करने और विभिन्न परिस्थितियों में समायोजित करने में मदद करती है। यह उनके शिक्षण दृष्टिकोण में आवश्यक परिवर्तन करके स्वस्थ मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति प्रदान करके प्राप्त किया जा सकता है। अकादमिक उपलब्धि, उत्कृष्टता के मानक के साथ पूरा करने में सफलता है, सभी संस्कृतियों, देशों में उच्च सम्मान के साथ महत्वपूर्ण मूल्य

है और माता-पिता और छात्रों के बीच बढ़ती जागरूकता कॉलेज स्तर पर विभिन्न गतिविधियों को प्रदान करती है।

4. अनुसंधान पद्धति/अनुसंधान कार्य की आवश्यकताएं

अनुसंधान पद्धति अनुसंधान समस्या को व्यवस्थित रूप से हल करने का एक तरीका है। जिसे वैज्ञानिक रूप से शोध कैसे किया जायेगा, इसका अध्ययन करने के लिए विज्ञान के रूप में समझा जायेगा। शोध अध्ययन वर्तमान शोध, उद्देश्यों और अध्ययन की प्रक्रियाओं को संचालित करने के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति और प्रक्रिया पर प्रकाश डालेगा। अनुसंधान किसी भी प्रकार की अस्पष्टता को कम करता है और परिणाम में स्पष्टता लाता है और इस प्रकार अध्ययन के लिए अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों की योजना बनाने में सहायक हो जाता है। वर्तमान अध्ययन कॉलेज के छात्रों के सीखने की दर से संबंधित होगा जोकि उनकी सीखने की शैली और सोचने की क्षमता और उपयोग में कौशल की क्षमता और पारिवारिक वातावरण से संबंधित होगा। पारिवारिक वातावरण उनकी सीखने की शैली और सोच के पहलुओं से संबंधित होगा। जोकि घर पर मान्यता, प्रशंसा, जीवन के सही आदर्शों को स्थापित करने की पर्याप्त स्वतंत्रता उन्हें कॉलेज के छात्रों में आत्म-अवधारणा विकसित करने के लिए प्रेरित से संबंधित होगा। प्रस्तुत शोध में छात्रों का अच्छा घर और बेहतर कॉलेज माहौल उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और उचित शैक्षणिक उपलब्धि के लिए कार्य से भी संबंधित अध्ययन किया जायेगा।

अनुसंधान प्रकार

विश्लेषण का उद्देश्य अध्ययन में डेटा के सार को परिभाषित करना होगा। डेटा की प्रकृति को देखते हुए, वर्तमान में चल रहे कार्य में गुणात्मक सह मात्रात्मक पहलू होंगे, लेकिन मुख्य रूप से पहलू में मात्रात्मकता होगी, क्योंकि इस विश्लेषण के अधिकांश निष्कर्ष मात्रात्मक उपायों पर केंद्रित होंगे।

शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के परिणामों पर अध्ययन किया जायेगा, जिसमें गुणात्मक विश्लेषण को भी परिभाषित किया जायेगा।

नमूना डिजाइन

शोध कार्य के कुछ मामलों में, पूरे शोध का विश्लेषण करना लगभग असंभव होगा; इसलिए शोध नमूने का उपयोग करना ही एकमात्र विकल्प होगा। वर्तमान शोध का एक ही उद्देश्य होगा, शोध कार्य के विश्लेषण का नमूना तय करने की प्रक्रिया, प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, सीखने की शैली और तनाव समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण के संबंध का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित होगा।

इस पद्धति में, शोधकर्ता ने बीदर शहर की आबादी के 10 डिग्री कॉलेजों से 840 उत्तरदाताओं के नमूने का चयन करेगे, और अध्ययन के उपकरणों को प्रशासित किया है जो कि समायोजन सूची, पारिवारिक पर्यावरण पैमाना, तनाव स्केल, और शैक्षणिक उपलब्धि, अकादमिक उपलब्धि स्कोर से संबंधित होगा।

आंकड़ा संग्रहण

डेटा संग्रह अनुसंधान गतिविधियों के लिए पूर्ण और सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए स्रोतों से डेटा एकत्र करने और मापने का व्यवस्थित तरीका होगा। अध्ययन के सभी क्षेत्रों में तथ्य संग्रह घटक शरीर और सामाजिक विज्ञान, मानविकी और निगमों पर आधारित होगा। यह शोधकर्ता और विश्लेषकों द्वारा एकत्रित की जाने वाली जानकारी पर आधारित होगा। जोकि शोध विषय वस्तु के दृष्टिकोण के विपरीत, सही और सच्चे क्रम को बनाए रखने का मूल्य उद्देश्य होगा। अनुसंधान की विश्वसनीयता को बनाए रखने और उत्कृष्ट परिणामों और उनके निष्कर्षों को

सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान डेटा संग्रह आवश्यक होगा। अध्ययन लक्ष्यों के लिए पहली और द्वितीयक डेटा आपूर्ति दोनों एक मूल्यवान उपकरण है।

प्राथमिक डेटा

प्राथमिक आँकड़े सर्वेक्षण, टिप्पणियों, साक्षात्कारों, प्रश्नावली और परीक्षणों के माध्यम से प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से प्राप्त किए जायेगे।

सहायक डेटा

द्वितीयक डेटा उपयोगकर्ता के बजाय किसी ओर शोधकर्ता द्वारा एकत्र किया गया डेटा होगा। जोकि इस शोध के विश्लेषण/रीचेरचे अध्ययन से जुड़ा नहीं होगा, अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य हेतु माध्यमिक (डेटा) जानकारी एकत्र की जाएगी, जोकि प्राथमिक डेटा की तुलना में आसानी से सुलभ और प्रभावी होगी।

द्वितीयक डेटा संग्रह के स्रोत इस प्रकार हैं:

• सरकारी विभाग की पत्रिकाएँ,

• संगठनात्मक रिकॉर्ड,

• पत्रिकाएं,

• जर्नल, किताबें,

• समाचार पत्र और

• जानकारी जो मूल रूप से अन्य शोध उद्देश्य के लिए एकत्र की जाती है।

अध्ययन की सांख्यिकीय तकनीकें:

सांख्यिकीय तकनीक किसी भी शोध में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि वे विश्लेषण की व्याख्या करने और फिर निष्कर्ष निकालने के साधन हैं। डेटा के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया जायेगा और मानक सूत्रों का उपयोग करके गणना की गई जाएगी:

i) प्रतिशत

ii) साधन और मानक विचलन

iii) प्रतिगमन विश्लेषण

iv) सह-संबंध का गुणांक

वी) एनोवा

5. शोधकार्य के अध्ययन

अध्याय-1 प्रस्तावना

अध्याय-2 साहित्य की समीक्षा

अध्याय-3 शोध कार्यप्रणाली

अध्याय-4 डेटा विश्लेषण ओए व्याख्या

अध्याय-5 निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

6. संदर्भ ग्रन्थ सूची

देसीरी बोलियन किन; निओब वे; प्रीतिका मुखर्जी (2018), "द अदर साइड ऑफ द मॉडल माइनॉरिटी स्टोरी: द फैमिली एंड पीयर चैलेंजेज फेस्ड बाय चाइनीज अमेरिकन एडोलसेंट्स", यूथ सोसाइटी जून 2008 वॉल्यूम। 39 नंबर 4 पेज 480-506

संध्या मिश्रा और डॉ वीना बंबा (2018), "विज्ञान विषय में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव", अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 2, अंक 5

डॉ के सी बरमोला (2018), "पारिवारिक पर्यावरण, मानसिक स्वास्थ्य और किशोरों का अकादमिक प्रदर्शन", आईजेएसआर - वैज्ञानिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 2, अंक 12, एमिटी विश्वविद्यालय राजस्थान

स्वप्निल महेंद्र कांबले (2019), "पारिवारिक पर्यावरण का अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव: सामाजिक कार्य हस्तक्षेप की आवश्यकता", इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम। III, अंक। बारहवीं

एम्बर एल पॉकर्ट; जेरेमी डब्ल्यू पेटिट; मैरिसोल पेरेज़; Rheeda L. Walker (2019), "एथनिक माइनॉरिटी कॉलेज के छात्रों के बीच सांस्कृतिक तनाव की प्रभावशाली और गुणकारी विशेषताएं", यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन, जर्नल ऑफ साइकोलॉजी: इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड। खंड 140; पाँच नंबर; वर्ष 2006। 405-419

डेविड पुटवेन (2017), "छात्रों में शैक्षणिक तनाव और चिंता का शोध: कुछ पद्धतिगत विचार", एज हिल विश्वविद्यालय, ब्रिटिश शैक्षिक अनुसंधान जर्नल। खंड 33; नंबर 2; वर्ष 2007. 207-219।

एमिली ए। पियर्सल; मैरीबेले सी। कीम, (2017), "सामुदायिक कॉलेज के छात्रों के बीच तनाव और मुकाबला रणनीतियां", सेंट्रल कम्युनिटी कॉलेज, कोलंबस, नेब्रास्का, कम्युनिटी कॉलेज जर्नल ऑफ रिसर्च एंड प्रैक्टिस। खंड 31; नहीं 9; वर्ष 2007. 703-712

राकेश कुमार अग्रवाल; शैलेंद्र सिंह चाहर (2017), "भारत में तकनीकी छात्रों के बीच भूमिका तनाव की जांच", प्रबंधन प्रौद्योगिकी संस्थान, गाजियाबाद, यूपी, भारत, शिक्षा का सामाजिक मनोविज्ञान। वॉल्यूम 10; नंबर 1; वर्ष 2007. 77-91।

डेविड रोबॉथम (2018), "उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच तनाव: एक शोध एजेंडा की ओर", डी मोंटफोर्ट विश्वविद्यालय, लीसेस्टर, यूके, उच्च शिक्षा। खंड 56; नहीं 6; वर्ष 2008. 735-746।

हांगलिन चेन; यू-चेउंग वोंग; माओ-शेंग रान; क्रिस्टी गिलसन (2019), "शंघाई विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच तनाव: सामाजिक कार्य समर्थन की आवश्यकता", हांगकांग विश्वविद्यालय, सामाजिक कार्य जर्नल। खंड 9; नंबर 3; वर्ष 2009. 323-344

ताजुलरीपिन सुलेमान; अमीनुद्दीन हसन; विजाता एम.सेपियन; सैफुद्दीन कुमार अब्दुल्ला (2019), "मलेशिया में शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के बीच तनाव का स्तर", मलेशिया, सामाजिक विज्ञान के यूरोपीय जर्नल। वॉल्यूम 10; नंबर 2; वर्ष 2009. 179-184।